INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 24-25
Received: 29-05-2020
Accepted: 30-06-2020

पूरन लाल मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर दिल्ली विश्वविधियालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
पूरन लाल मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर दिल्ली विश्वविधियालय, दिल्ली, भारत

बौद्ध शहर तक्षसिला

पूरन लाल मीना

सारांश
तक्षशिला की ऐतिहासिकता सब क्षेत्र में विश्व प्रसिद्व रही है ज्ञान – विज्ञान में तो थी ही साथ साथ बौद्ध धर्म के बारे में ज्यादा प्रसिद्ध रही है तक्षशिला के इस पूरे क्षेत्र को तीन भागो में बाटा गया है – सिर कप, सिर सुख, भीर माऊंड इन सब को चीनी बौद्ध तीरथ यात्री हेनसांग ने देखा उसके बाद प्रसिद्ध पुरातत्वेत्ता जान मार्शल, ए. कनिघम ने उतखनन कर चीनी यात्री की बातो को प्रमाणों से सत्यापित किया, प्रसिद्ध मौर्य सम्राट अशोक ने अपने सिला लेख तक्षशिला में स्थापित कराये जिनके माध्यम से जन समूह को सीधे अशोक के जन कल्याणकारी कार्यो की जानकारी मिलती रहे तक्षशिला के बौद्ध मठ, बौद्ध स्तूप, इस सहर को बौद्ध स्थल होने के प्रमाण देते है यही पर प्रसिद्ध धर्मराजिका बौद्ध स्तूप है जिसमे भगबान बुद्ध का बाल सुरक्षित है इसे कुणाल ने निर्मित कराया इस बिसाल बौद्ध स्तूप को चीनी बौद्ध तीरथ यात्री देख कर चकित रह गया चीनी यात्री फाह्यान ने इस स्थल पर प्रसिद्ध विश्वबिद्यालय होने की बात कही है जिसमे प्रबेश कठिन परीक्षा के माध्यम से होता था जिसमे कई सो विदेशी छात्र अध्यन करने आते, जिनका खर्चा दान से मिले धन से पूरा किया जाता था जहा बौद्ध धर्म के साथ साथ विज्ञान की शिक्षा प्रदान की जाती थी

मुख्य शब्दः पुरातत्व, बौद्धधर्म, धर्मराजिकास्तूप, बौद्धमठ, चीनी यात्रीहेनसांग, कुणाल

भूमिका
पुरातत्व की भाषा में जिस स्थल पर बौद्ध साहित्य में लिखित संदर्भ की बातों के भौतिक अवशेष जेसे शिलालेख अभिलेख, सिक्के, स्मारक वस्त्र अस्त्र–शस्त, पूजा सामग्री इतयादि प्राप्त हो जाये उसी स्थल को पुरातात्विक इतिहासकाऐतिहासिक स्थल कहा जाता है बौद्धों के संबंध में उत्तर–पश्चिम भारतीय उप–महाद्वीप में अनेकों ऐतिहासिकस्थल है जेसे तक्षशिला जिसके तीन स्थल महत्वपूर्ण रहे हें प्रथत सिरकप दूसरा भीरमाउन्ड, तीसरा सिरसुख। इनमें धर्मराजिका बौद्ध स्थल सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है जिसे सर्वप्रथम किसने निर्मित कराया इसका सटीक अंदाजा लगाना आसान नहीं है पर सर्वाधिक कलाकृत्तियाँ मौर्य सम्राटों की है इनमें कुणाल जो अशोक के पुत्र और तक्षशिला के गवर्नर रहे थे अतः कुणाल कालीन माने जाने की ज्यादा प्रमाणिकता दिखाई देती है। [1]
तक्षशिला के संदर्भ मेंजॉन मार्सल तथा कनिघम जो कि एक प्रसिद्व पुरात्वेत्ता रहे हैं ने पाली भाषा के बौद्ध ग्रंथों में उल्लेखित एक घटना का अपने स्तर पर खण्डन भी किया है बौद्ध पालि ग्रन्थों में उल्लेखित है कि मौर्य सम्राट अशोक की एक युवा रानी तिष्यरक्षिता जो कुणाल से एक तरफा प्यार का इजहार कर बैठती है और राजकुमार कुणाल से उचित उत्तर नहीं मिलने पर कुणाल की आँखें निकालने की राजाज्ञा दे देती है कुणाल को अंधा कर दिया जाता है। इसके लिए अशोक की युवा रानीतिष्यरक्षिता छलकपट कर राजाज्ञा जारी करने के लिए अशोक के दांत का शील के रूप उपयोग करती है। ताकि राजाज्ञा कि प्रमाणिकता पर किसी को शक नहीं हो। सेवकों द्वारा राजाज्ञा का शतप्रतिशत पालन भी किया जाता है और इस सब का काफी समय वाद मौर्य सम्राट अशोक पता चल जाता है।
ए. कनिघम ने तक्षशिला में दो पुरावस्तुओं की पहचान की है प्रथम हसन अवदल पर पंजा साहिव का पवित्र टेंक दूसरा भोती पिन्टू में ध्वस्त बौद्ध स्तूप। ए. कनिघम अन्य दो बौद्ध स्तूप के बारे में जानकारी नहीं दे पाया था। ए. कनिघम द्वारा सिरकप शहर को देखा गया भीर माऊड को चीनी बौद्ध तीर्थयात्री हैनसांग ने भी देखा और किताब सी–यू की में इसका विस्तार वर्णन किया। पर कनिघम इन दोनों बौद्ध स्तूपों के बारे सही–सही जानकारी नहीं दे पाये शायद कनिघम ने हैनसांग द्वारा उल्लित शहर भीर–माऊण्ड को सिरकप शहर ही समझ लिया गया। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि तक्षशिला भीरमाउण्ड पर स्थित है जो अब सिर सुख शहर भी कहलाता हैं या कह सकते हैं कि तक्षशिला का क्षेत्रफल दूर–दूर तक फैला हुआ था बुद्ध का पवित्र सिर भाल्लार बुद्धिस्ट स्तूप से प्राप्त हुआ है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण पुरातात्विक वस्तु है पुरातत्ववेत्ताओं के लिए एक अच्छा

प्रमाण। [2] उत्तर–पश्चिम में इस बौद्ध स्तूप को अर्थात् भाल्लार बौद्ध स्तूप को मौर्य गवर्नर कुणाल द्वारा निर्मित कराया गया। जो सिरकप के निचले शहर में स्थित है चीनी यात्री हैनसांग के अनुसार यह बौद्ध स्तूप 100 फीट ऊँचा बनाया गया था।

कुणाल की आँखे निकालने गये मंत्री ने जब कुणाल को महारानी तिष्यरक्षिता की झूठी राजाज्ञा को सुनाया तो कुणाल ने अपने पिता अशोक के प्रति सम्मान दिखाया और कहा कि मंत्री राजाज्ञा का पालन करे और कुणाल की आँखें निकाल ली गई। इस सब घटना से स्वयं अशोक अनभिज्ञ थे। [3]

बौद्ध चीनी यात्री हैन सांग ने मोहरा मोरादू नामक बौद्ध स्तूप का उल्लेख किया है जिसे कुणाल ने बनवाया था जो सिरकप शहर में नहीं था। जो सिरकप के पूर्वी भाग में स्थित था। 1962 में कनिघम ने इन दोनों किलों को देखा और दोनों की दीवार के ऊँचे शिखर मौजूद दिखे।

1862 में कनिघम ने शक काल के कुछ अवशेष भी वहाँ देखे जिनमें एक ऊँची बड़ी दीवार एक ऊँचा किला भी देखा। पुरातात्विक उत्खनन के बाद कनिघम ने यहाँ बौद्ध स्तूप के पुख्ता अवशेष देखे।

कनिघम को उत्खनन के समय दो स्तर प्राप्त हुए और प्रथम और दूसरे स्तर में दो शताब्दियों का अंतर देखा। प्रथम स्तर जिसे बौद्ध स्तूप के रूप पहचाना गया और जिसका उल्लेख विस्तार से बौद्ध तीर्थ यात्री हैनसांग ने किया भी था जिस–जिस बौद्ध स्तूप का हैनसांग जिक्र किया 7वीं शताब्दी की इन सब बातों को कनिघम ने पुरातात्विक उत्खनन करते समय 1862 में सही पाया था परन्तु उत्खनन के समय दो स्तर के ढाँचे पाये गये थे इन दोनों सतर केढाँचों में कनिघम को दो शताब्दियों का अंतर भी मिला। ये एक तरह से प्रथम बौद्ध स्तूप का ढांचा जो मौर्य कुणाल के समय का था और दूसरा शक शासन काल का रहा था। [4]

कनिघम ने हेनसांग द्वारा तक्षशिला और उसके पश्चिमी, पूर्वी, उत्तरी भागों में बनवाये विशाल बौद्ध स्तूप के अवशेषों को उत्खनन से प्राप्त किया हैनसांग के वर्णन को जो साहित्यिक था पुरातत्व से प्रमाणिकता प्रदान की। आज ये पूरा बौद्ध क्षेत्र पाकिस्तान में पड़ता है। अतः अब इस पर अधिक पुरातात्विक उत्खनन नहीं हो सका है। पार्थियन सिटी सिरकप के आस–पास बहुत से बौद्ध स्मारक और बौद्ध स्तूप पुरातात्विक उत्खनन में ए. कनिघम को प्राप्त हुए है। इनसे सबसे महत्वपूर्ण धर्मराजिका बौद्ध स्तूप है जो एक विशाल बौद्ध मंदिर रहा था। एक संघाराम के अवशेष यहाँ प्राप्त हुए है वैशाली राजाग्रह जेंटवन की तरह यहाँ भी बहुत से बौद्ध स्थल मिले हैं। जिनमें बड़े–बड़े हाल चेत्य, स्तूप, कमरे इत्यादि है इनमें बहुत से बौद्ध भिक्षु–भिक्षुणिया रहते थे।

निष्कर्ष:

इस महान शहर तक्षशिलाके बीचो–बीच में बहुत से बौद्धमठ स्थित थे प्रथम से पाँचवीं शदी के बीच के बने इन स्थलों को ईसा की पहली से पाँचवी सदी तक अच्छी स्थिति प्राप्त होती रही। धर्मराजिका बौद्धस्तूप के आसपास बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अनेको बौद्ध भिक्षु और बौद्ध धर्मानुयायियों का इन स्थलों पर जमावड़ा रहता था। यही शिक्षा जगत के अच्छे–अच्छे विद्वान विद्यार्जन हेतु यहाँ आते थे। ये बड़े पैमाने के बौद्ध स्थल जो विशाल स्थल पर फैले हुए थे इनमें रहने वालों के लिए दान–दक्षिणा, भोजन–राशन, वस्त्र इत्यादि पड़ौस के सम्पन्न गांवों से आता जिससे ज्ञान विद्यार्जन में संलग्न भक्तों को कोई समस्या न हो पाये।

धर्म राजिका बौद्ध स्तूप में 1913 में जॉन मॉर्सल ने उत्खनन शुरू किया उन्होंने पाया कि स्तूप का वेश 20 से 30 फीट तक का रहा है उत्तर में बौद्ध मठ द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्र को कवर किया गया है स्तूप में एक विशाल प्रदाक्षिणा पथ। [5] फाह्यान पश्चिमी चीन से खोतान, गांधार तक्षशिला होकर पेशावर पहुंचा भारत में चीनी तीरथ यात्री फाह्यान ने जिन बौद्ध स्थलों को देखा उनका वर्णन अपनी पुस्तक गावोसेंग फाह्यान झुआंन अर्थात ''बौद्ध राजतन्त्रो का एक दस्तावेज ''में विस्तार से किया उसी के ग्रन्थ से भारत के बारे में चीनी धारणा का पता लगता है फाह्यान ने साठ बर्स की उम्र में भारत की तीरथ यात्रा की सिरुआत की और चागांन (चीन का एक प्रान्त) को छोड़कर स्थल के रास्ते अपनी भारत यात्रा सिरु की सत्रह बर्स भारत में बिता कर जब फाह्यान भारत छोड़ रहा था तब उसकी उम्र सत्तहत्तर बर्स थी फाह्यान का मुख्य उदेस्य बौद्ध संघ से सम्बंधित मूल ग्रंथो को अपने देश ले जाना था इसी कारन से भारतीय उप महादीप के विभिन्न बौद्ध स्थान, विहार स्तूप फाह्यान के वर्णन का हिस्सा रहे उसने बौद्ध तीरथ स्थलों पर जो भी मिला उसका दस्तावेजीकरण किया फाह्यान के अनुसार गावो में खुसहाल इंसान रहते जो अपना रजिस्ट्रीकरण नहीं कराते अर्थात अपना पंजीकरण कराने किसी अधिकारी के पास जाने की जरुरत उन्हें नहीं थी जो लोग सरकारी भूमि पर कृषि करते है उनको अपनी उपज का एक हिस्सा राज को देना पड़ता था बो चाहे तो अगली बार उसभूमि पर कृषि नहीं करने को स्वतंत्र भी थे, बो बहा से दूसरे स्थान को पलायन भी कर सकते थे।

संदर्भ:

1. अल्वीन एफ. आर. हाउ ओल्ड एज द सिटी ऑफ टेक्सिला एंटिक्विटीः पृ. 8–14.
2. एग्जॉमेंट, पी. अच्. अल. द मुरुन्दास एंड द अन्सिएंट ट्रेड रूट फ्रॉमतक्षशिला टो उज्जैन'' 1966, पृ. 278–93.
3. मार्शल, जे. एच. ए गाइड टो तक्षशिला फोर्थ एडिशन, पाकिस्तान डिपार्टमेंट ऑफ अर्काएओलोयजी, १६६०.
4. मेहता आरे. एल., प्रे बुद्धिस्ट इंडिया, बॉम्बे इंडियन हिस्टोरिकल रिसर्च इंस्टिट्यूट, १६३६.
5. मार्शल, जे. एच. तक्षिला, वॉल्यूम्स ३, कैंब्रिज, सी य, १६५१.